अभिभाषण

प्रथम दीक्षांत समारोह – 15-10-2019

डॉ० प्रेम कुमार, माननीय मंत्री कृषि –सह– पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार

मुझे आज यहाँ बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के प्रथम दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में पशुधन को आदिकाल से महत्ता दी गई है। महान सम्राट अशोक ने अपने शासन काल में पशुओं के साथ नागरिकों की तरह व्यवहार किया और उनके कल्याण के लिए कई पशु चिकित्सालयों का निर्माण करवाया। इसके अलावा उन्होंने अनुपयोगी पशुओं के संरक्षण के कई उपाय किये एवं उनकी कोई हत्या न करे उसका आदेश निकला। हमारे राज्य में लगभग 97.5 प्रतिशत सीमान्त एवं लघु किसान हैं जिनके पास राज्य का 96.8 प्रतिशत पशुधन हैं। किसानों और गावों के गरीब परिवारों की आय में वृद्धि के लिए पशुपालन को प्रोत्साहन देना अतिआवश्यक है। प्रदेश में पशुधन के कल्याण के लिए सरकार द्वारा कई तरह की योजनायें चलाई जा रही है। इसमें पशुओं का टीकाकरण सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है। सरकार समय–समय पर बड़े पैमाने पर पशुओं का टीकाकरण कराने हेतु अभियान चलती है, जिससे पशुओं को विभिन्न रोगों से बचाया जा सकता है। इसी तरह पुरे प्रदेश में पशु चिकित्सालय, पशु चिकित्सा सहायता केंद्र तथा कृ

त्रिम गर्भाधान के केंद्र खोले गए हैं जो पशुपालकों की सेवा कर रहे हैं। हमारा दुग्ध उत्पादन देश की औसतन वार्षिक वृद्धि दर से दोगुना रफतार से बढ़ रहा है। हाल के वर्षों में बिहार प्रदेश ने पशुपालन, मुर्गीपालन और मछलीपालन में भी नए कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इस सफलता के लिए मैं सभी को बधाई देता हूँ।

राज्य में कृषि एवं पशुपालन के विकास के लिए शिक्षा एवं प्रसार सबसे महत्वपूर्ण है। इस लिए कृषि रोड़ मैप में इसके लिए व्यापक कार्यक्रम निर्धारित किये गये है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना करना हमारे तीसरे कृ षि रोड मैप के लक्ष्यों में प्रमुख रूप से दर्शाया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि यह विश्वविद्यालय प्रगति के पथ पर अग्रसर है और आज अपना प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन कर रहा है। साथ ही मैं महामहिम राज्यपाल महोदय का भी धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने अपना बहुमूल्य एवं कीमती समय आज दिया है।

विश्वविद्यालय का विस्तार कार्य तेजी से चल रहा है, किशनगंज में नए मात्स्यिकी महाविद्यालय की स्थापना इसका उदहारण है। विश्वविद्यालय बनते ही शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सुधार को प्राथमिकता दी गई है, पारदर्शिता को प्रमुखता देने के लिए ई–प्रशासन प्रणाली अपनाई जा रही है। मुझे जानकारी दी गई है कि इस वर्ष हमारे विद्यार्थियों ने भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् द्वारा संचालित विभिन्न राष्ट्रीय परीक्षाओं में अच्छी सफलता पायी है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान परियोजनाओं के लिए बाहरी स्रोतों से बड़े पैमाने पर अनुदान प्राप्त किया है। स्वच्छ और हरा–भरा

परिसर देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मैं अल्पावधि में उत्कृष्ट कार्य और अर्जित उपलब्धियों के लिए विश्वविद्यालय के सभी अधिकारीयों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विश्वविद्यालय का समाज के प्रति विशेष कर किसानों के प्रति उत्तरदायित्व है। ज्ञान का लाभ समाज तक पहुंचे, इसके लिए विश्वविद्यालय को गावों से जोडने का काम करना होगा। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक तथा छात्र जब गाँव—गाँव जाकर वहां के पशुपालकों की आवश्यकताओं को समझेंगे तभी हीं उन्हें समाज के प्रति कर्तव्य का बोध होगा। उन्हें गावों से जुड़ कर पशुपालकों को विभिन्न प्रकार के बीमारी के पहचान एवं उपचार, आधुनिक तरीके से पशुपालन, पशु उत्पादक, सही विपणन, खाद्य सुरक्षा मानकों इत्यादि के बारे में जानकारी एवं प्रशिक्षण देना होगा। इसके अलावा विश्वविद्यालय को किसान सहायता केंद्र भी खोलना चाहिए, जिससे की दूरस्थ पशुपालको की समस्याओं का समाधान एवं महत्त्वपूर्ण जानकारी आसानी से मिल सके। अभी हमारे राज्य में ग्रामीण क्षेत्र में लगभग ४९ प्रतिशत पशुपालक हैं। हमें अन्य किसानों को प्रोत्साहित कर पशु एवं मत्स्य पालन में सम्मिलित करना होगा। विश्वविद्यालय को राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में पशु विज्ञान केंद्र स्थापित करके किसानों को पशु विज्ञान सी प्रभावी रूप से जोडा जा सकता है तथा किसानों को पशुधन से अधिक लाभ मिल सकता है। मैं मानता हूँ कि पशु विज्ञान के व्यापक प्रसार से प्रदेश में रोजगार बढेगा, पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण दूध, अंडे और मछली की उपलब्धता बढ़ने से प्रदेश में महिला एवं बाल कुपोषण को रोका जा सकेगा।

आजकल देश के अनेक भागों में लावारिश गौ वंश की संख्या बढती ही जा रही है, क्योंकि मात्र एक ट्रैक्टर कई बैलों को अनुपयोगी बना देता है, लेकिन इस मशीनीकरण के युग से अनभिज्ञ और निरपेक्ष भूखे–प्यासे मवेशी फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। भारत की आधुनिक खेतिहर संस्कृति का यह दुश्चक्र किसान के जीवन में गौ वंश को पुन: लाभकारी बनाकर ही टाला जा सकता है। गैर दुधारू पशु गोबर, गौ मूत्र और पशु शक्ति दे सकते हैं। गोबर से यदि गोबर गैस बनाई जाये, तो अच्छी खाद भी मिलेगी और इंधन भी मिलेगा। बड़े स्तर पर गैस को व्यावसायिक रूप में सिलिंडर पैक करके बेचा भी जा सकता है। जिसका प्रयोग रसोई के इंधन के अलावा वाहनों के इंधन के रूप में भी किया जा सकता है। इससे पेट्रोलियम आयात में कमी आएगी, स्वच्छ इंधन भी उपलब्ध होगा। गौ मूत्र को जीवामृत खाद बनाकर कमी का साधन बनाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त पशु वैज्ञानिक नए प्रयोग के रास्ता सुझा सकते हैं और सरकार को पॉलिसी तैयार करने में अपनी विशेषज्ञ सलाह प्रदान कर सकते हैं। मुझे आशा है कि आपलोग गाय की उपयोगिता और गाय के महत्त्व को भारतीय कृषि और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में अगली पीढ़ी तक शिक्षा के माध्यम से पहुँचाने में सहायक सिद्ध होंगे।

इस वर्ष सभी भारत वासी तथा विश्व समुदाय के अनेक लोग हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की १५०वीं जयंती मना रहे हैं। महात्मा गाँधी ने बुनियादी शिक्षा सिद्धांत को स्वीकार किया, जिसमें शैक्षणिक विषयों के रूप में कृषि, बागवानी, पशुपालन, ग्रामीण उद्योग इत्यादि पर जोर दिया, जिससे ग्रामीण

विकास हो सके। उनके अनुसार छात्रों को अपने विभिन्न शिक्षाविदों के साथ–साथ स्व–सहायता, आत्मनिर्भरता और श्रम की गरिमा सिद्धांतों को भी सीखना चाहिए। गाँधी जी ने विद्यार्थियों के समाज सेवा पर बल दिया था। उन्होंने यह भी कहा था कि समाजसेवा के लिए सबसे पहले जरुरत चरित्र–बल की है। मैं मनाता हूँ कि जब आप सब अपने समाज और देश के प्रति संवेदनशील रहेंगे तो आप सहज ही समाज कल्याण और राष्ट्र–निर्माण के लिए प्रेरित होंगे। मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय से प्राप्त शिक्षा का भरपूर उपयोग आपसब अपने विकास और देश की प्रगति के लिए करेंगे। मेरी शुभकामना और आशीर्वाद है कि आप सभी सफलता के पथ पर हमेशा आगे बढ़ते रहें। आपका भविष्य उज्जवल हो।

जय हिन्द, जय भारत, जय विज्ञान, जय अनुसंधान।